Guru Vandana

बंदऊं गुरु पद पदुम परागा । सुरुचि सुबा स सरस अनुरागा ॥
अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू॥
१॥

भावार्थ- मैं गुरु महा राज के चरण कमलों की रज की वंदना करता हूं, जो सुरुचि (सुंदर स्वा द), सुगंध तथा अनुरा ग रूपी रस से पूर्ण है। वह अमर मूल (संजीवनी जड़ी) का सुंदर चूर्ण है, जो संपूर्ण भव रोगों के परिवार को नाश करने वाला है॥१॥

,

सुकृति संभु तन बिमल बिभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । किएं तिलक गुन गन बस करनी ॥२॥

भावार्थ- वह रज सुकृति (पुण्यवा न् पुरुष) रूपी शिवजी के शरीर पर सुशोभित निर्मल वि भूति है और सुंदर कल्याण और आनन्द की जननी है, है भक्त के मन रूपी सुंदर दर्पण के मैल को दूर करने वा ली और तिलक करने से गुणों के समूह को वश में करने वा ली है॥ २॥

श्री गुर पद नख मनि गन जोती । सुमि रत दिब्य दृष्टि हि यं होती ॥

दलन मो ह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू॥३॥
भावार्थ- श्री गुरु महाराज के चरण-नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जि सके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करने वाला है, वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं॥हैं ३॥

’ उघरहिं बिमल बिलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के॥

सूझहिं राम चरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहं जो जेहि खानिक॥४॥

भावार्थ- उसके हृदय में आते ही हृदय के निर्मल नेत्र खुल जाते हैं और संसार रूपी रात्रि के दोष-दुख मिट जाते हैं एवं श्री रामचरित्र रूपी मणि और माणिक्य, गुप्त और प्रकट जहां जो जिस खान में है, सब दिखाई पड़ने लगते हैं-॥४॥

बंदउं गुरु पद कंज कृपा सिं धु नररूप हरि ।
महा मो ह तम पुंज जा सु बचन रबि कर नि कर॥५॥

भावार्थ- मैं उन गुरु महाराज के चरणकमल की वंदना करता हूं, जो कृपा के समुद्र और नर रूप में श्री हरि ही हैं और जिनके वचन महामोह रूपी घने अंधकार का नाश करने के लिए सूर्य किरणों के समूह हैं॥५॥

चौपाई

दोहारू

जथा सुअंजन अंजि दृग सा धक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान॥१॥

भावार्थ- जैसे सिद्धांजन को नेत्रों में लगा कर साधक, सिद्ध और सुजान पर्वतों , वनों और पृथ्वी के अंदर कौतुक से ही बहुत सी खानें देखते हैं॥१॥

चौपाई

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन। नयन अमिअदृग दोष बिभंजन॥
तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन। बरनउं रामचरित भव मोचन॥१॥

भावार्थ- श्री गुरु महाराज के चरणों की रज कोमल और सुंदर नयनामृत अंजन है, जो नेत्रों के दाषों का नाश करने वाला है। उस अंजन से वि वेक रूपी नेत्रों को निर्मल करके मैं संसा ररूपी बंधन से छुड़ा ने वाले श्री रामचरित्र का वर्णन करता हू

InstaAstro